THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

परमेश्वर को सर्वप्रथम रखने के प्रतिफल
The Rewards of Putting God First

Author – Alvin Nissen

The Christian Science Journal Vol. 128, No. 08, August, 2010

एक प्रेरित लेखक ने कहा, "जैसा एक मानव दिल से सोचता है, वह वैसा ही है" (देखें नीतिवचन 23:17)। नए युग की विचारधारा की कुछ तरगें यह सिखाती है कि हम इन्सानी इच्छा और उन्नत सोच से जो प्राप्त करना चाहते हैं, वह प्राप्त कर सकते हैं। पहली नज़र से देखने पर इन तर्कों के दो मतों के बीच कोई अंतर दिखाई नहीं देता। परंतु क्रिश्चिसन साँयस के दृष्टिकोण द्वारा सूक्ष्म विश्लेषण एकदम विभिन्न सा दृश्य दिखाता है। और इन दो विचारो का अंतर महत्वपूर्ण मायने रखता है।

नीतिवचन के एक लेखांश में, बाइबल का लेखक अपने पाठकों को भौतिक सम्पन्नता के लिए मेहनत करने से सावधान कर रहा था और अपनी बुद्धि पर विश्वास करने से रोक रहा था (देखें नीतिवचन 23:4)। वह अपने श्रोताओं को भी सावधान कर रहा था कि वह चौकन्नें रहें कि वह अपनी नज़र किस पर टिकाते हैं। हम अपने आप से यही प्रश्न कर सकते है: क्या हम **परमेश्वर**, दिव्य **आत्मा** पर क्रेन्दित कर रहे हैं या भौतिक वस्तुओं पर ? और हमारा उद्देश्य क्या है? क्या यह थोड़ा सा कृपा में विकास करके बेहतर इन्सान बनना हैं ताकि मानवजाति की सहायता कर सकें या यह केवल अपने आप को ज्यादा आराम देने के लिए? ज्यादा सरलता से क्या इम **परमेश्वर** को पहले रखते हैं या भौतिक वस्तुओं को।

जीसस के शब्द, " पहले **परमेश्वर** के साम्राज्य और उसकी धार्मिकता के लिए प्रयत्न करो और ये सारी चीजें आप को मिल जाएँगी " (मत्ती 6:33), **परमेश्वर** को सर्वप्रथम रखने के महत्व के लिए चेतावनी देते हैं। मैं अपने आपसे पूछता रहता हूँ कि मैं **परमेश्वर** को सर्वप्रथम रख रहा हूँ और दिव्य **मन** पर निर्भर करते हुए **परमेश्वर** की इच्छा को समर्पित कर रहा हूँ या मैं इन्सानी मन या विचारधारा और इस तरह इन्सानी इच्छा पर निर्भर कर रहा हूँ? यही अंतर पैदा करने वाली रेखा हैं। बाइबल कहती है, "कोई मानव दो मालिकों की सेवा नहीं कर सकता" (मत्ती 6:24)। मेरे लिए इसका मतलब है हम दोनों यानि इंसानी इच्छा और **परमेश्वर** की इच्छा को नहीं सुन सकते; हमें इनमें से एक को या दूसरे को सुनना होगा। लगभग पाँच साल पहले, मुझे इन अंशो को दिव्य अध्यात्म में प्रयोग में लाने का अवसर मिला।

---

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह **परमेश्वर** के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2011 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

परमेश्वर को सुनना

बहुत साल पहले, एक चमड़ी की बीमारी फैली हुई थी जिसका कारण कच्चे समुद्री भोजन को व्यवस्थित करने के लिए हाथों का प्रयोग करना था। मुझे इस स्थिति पर पढ़ा हुआ एक लेख याद है। भौतिक तस्वीर बहुत सुंदर नहीं थी। कई सालों बाद मैंने वैसी ही स्थिति अपने बाएँ हाथ के पिछले हिस्से पर पनपती हुई देखी। यह स्थिति मुझे खुजली और कष्ट देती थी। जब मैं इन भागों पर खुजली करता था, तब उनमें ओर

खुजली करने की इच्छा होती थी और यह मुझे अधिक चिंतित करती थी। अंत में, मैंने इनका सामना करने का निर्णय लिया और इसके लिए वास्तव में प्रार्थना करने का। इसने कुछ समय लिया और अधिक प्रार्थना करनी पड़ी परंतु अंत में यह स्थिति ठीक हो गई और पपड़ी उतर गई। अब मैंने बुधवार शाम की टैस्टीमोनी मीटिंग में अपने उपचार को दूसरो के साथ बाँटने के बारे में सोचा क्योंकि मैंने इसके बारे में किसी को कुछ नहीं बताया था और न ही मैंने इस उपचार के बारे में किसी से बात की थी। फिर भी मुझे विचार आया कि मुझे अभी इंतजार करना चाहिए।

कुछ ही मिनट के बाद एक चर्च मैंबर साथी ने एक टैस्टीमोनी दी जिसमें उसने इस मत को प्रार्थना से सुलझाने की जरूरत पर बोला कि एक अपवित्र आत्मा जिसको निकाला जा चुका है, दुबारा आ सकती है। यह उल्लेख जीसस की एक नीतिकथा में से है (देखें लूका 11:24–26)। मैंने समझना शुरू किया कि मुझे अपनी चेतना में से बीमारी के प्रस्ताव को पूरी तरह से निकालना होगा। अगर नहीं, तो मैं एक स्थिति या दूसरी में वापिस जाने के लिए जिम्मेदार होऊँगा।

मैंने तर्क किया कि मेरी सोच में से इस मत को निकालने का एक मात्र रास्ता यह समझना था कि बीमारी मेरे अस्तित्व का कभी भी हिस्सा नहीं थी। और सबसे अधिक महत्वपूर्ण था, जो सोच मे से निकाला जा चुका था, उस की जगह मुझे आध्यात्मिक तथ्यों को लाना था। क्रिश्चियन साँयस यह सिखाती है कि मानव परमेश्वर का प्रतिबिम्ब है–कि हम परमेश्वर के अस्तित्व को अभिव्यक्त करते है। एक शब्दकोष 'प्रतिबिम्ब' को कुछ प्रकट करना और स्पष्ट करना, परिभाषित करता है, इसलिए परमेश्वर का प्रतिबिम्ब होने के नाते हम ऐसा कुछ भी प्रकट नहीं कर सकते जो कि सीधा परमेश्वर से नहीं आता। क्योंकि परमेश्वर सर्वेसर्वा है, अगर कुछ परमेश्वर से नहीं आता, यह बिल्कुल है ही नहीं।

मैंने तर्क की इन पंक्तियों पर जितनी ज्यादा प्रार्थना की, वह मुझे उतना ही स्पष्ट होता गया कि एक आध्यात्मिक अस्तित्व होने के नाते, मुझे कभी भी चमड़ी का रोग नहीं हुआ क्योंकि परमेश्वर को कभी भी चमड़ी रोग नहीं होता। मैंने इस विचार को प्रेम किया कि यथार्थ में भौतिक कठिनाइयाँ तो मत में भी नही रहती। हम यह जानते है क्योंकि बाइबल प्रमाणित करती है कि मानव परमेश्वर के रूप और प्रतिरूप मे बना है और यह हमें सिखाती है कि परमेश्वर आत्मा है, कि परमेश्वर ही सर्व अच्छाई है और कि वह हमेशा विद्यमान है और सर्वशक्तिमान है। अगर यह सब सच्चाई है–और मैं विश्वास करता हूँ कि ऐसा है–एक हानिकारक भौतिक स्थिति सम्भवतः कहाँ हो सकती है? यह केवल भौतिक चेतना में ही हो सकती है। मेरी बेकर ऐडी ने लिखा " कि भौतिक पदार्थ वास्तविक है और उसमें जीवन और बोध है, यह नश्वरों के झूठे मतों में से एक है और सिर्फ काल्पनिक चेतना में पाया जाता है (साँयस एंड हैल्थ पृष्ठ 278)। कोई भी विषम भौतिक स्थिति इसलिए एक भ्रम है–एक सम्मोहित करने वाली स्थिति और झूठी कल्पना।

Translation © 2011 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

जैसे मेरी सोच स्पष्ट होती गई, मैंने कुछ देर बाद देखा कि निशान गायब हो गए थे। इस उपचार के बाद मैं बुधवार की टैस्टीमोनी मीटिंग मे खड़ा हुआ और क्रिश्चियन साँयस के लिए और चमड़ी के रोग के सम्पूर्ण तथा पूर्ण उपचार के लिए धन्यवाद दिया। मैं जानता था कि मेरी असली पहचान एक सच्चाई थी और मैं परमेश्वर से मिले इस बोध और अच्छाई को नहीं खो सकता था क्योंकि परमेश्वर की अच्छाई और प्रेम हमेशा ही भरपूर और स्थायी हैं। मैंने देखा कि मैंने इस उपचार से जो पाया, वह आध्यात्मिक परिपूर्णता की समझ थी– मेरी सच्ची सम्पति संतुलित और पूर्ण, किसी भी क्षेत्र मे कम न होते हुए। मैंने महसूस किया कि सच्ची प्रचूरता आध्यात्मिक है और उसमें सेहत, खुशी, ऊर्जा, जोश और आजादी सम्मिलित है–परमेश्वर के सभी गुण। यह मेरा असली इनाम था।

सच्ची प्रचूरता

अक्सर ऐसा लगता है कि एक 'कमी की चेतना' जो कि 'प्रचूरता की चेतना' के विरूद्ध है, इन्सानी अनुभव से आती है। हम किसी के बारे में सुनते हैं कि उसने लाटरी जीती पर कुछ ही समय बाद उसका धन छिन गया या धावक जिसने लाखों रूपए बनाए और दीवालिया घोषित हो गया। दूसरी तरफ हम एक व्यापारी के बारे में सुनते है जिसने अपना सब कुछ खो दिया और थोड़े से समय में सब कुछ प्राप्त कर लिया।

इस में ज़मीन आसमान का फर्क है कि लोग अपने दिल में क्या समझते हैं–बजाए इसके कि वह अपने दिमाग–इन्सानी मन मे क्या सोचते हैं। इसलिए मैं बाइबल के सिखाए गए सिद्धान्तों तथा मेरी बेकर ऐडी के लेखों में आध्यात्मिक वैज्ञानिक समझ को महत्त्वपूर्ण मानता हूँ। श्रीमति ऐडी ने लिखा, ''दिव्य मन जिसने मानव को बनाया है, अपने स्वंय के रूप और प्रतिरूप में देखभाल करता है।'' इन्सानी मन परमेश्वर का विरोधी है और इसे चुप करवा देना चाहिए जैसे कि संत पॉल ने घोषित किया''(साँयस एंड हैल्थ पृष्ठ 151)। बाइबल में सोलोमन ने धन सम्पति की बजाए एक समझदार हृदय माँगा ताकि उसे अच्छे और बुरे को परखने की क्षमता प्राप्त हो (देंखें दूसरा इतिहास पाठ 1)। सोलोमन द्वारा नई प्राप्त समझ के परिणामस्वरूप, उसे जो भी चीज चाहिए थी, उस में प्रचुरता मिली। जब हम परमेश्वर की तरफ मुड़ते है, तब हम आध्यात्मिकता मे असली प्रचूरता पा सकते हैं जैसे सोलोमन ने पायी। हमें जायदाद और भौतिक वस्तुएँ इकट्ठी करने की जरूरत नहीं क्योंकि हमारे पास प्रतिबिम्ब में वह सब कुछ है जो हमें परमेश्वर से चाहिए।

अनन्त आशीष

क्रिश्चिसन साँयस एक सुनिश्चित साँयस है। यह मत पर निर्भर नहीं अपितु समझ पर आधारित है! बाइबल के सत्यों की एक प्रेरित समझ, काईस्ट जीसस द्वारा सिखाए गए और प्रत्यक्षीकृत किए गए।

जैसे श्रीमति ऐडी ने मश्वरा दिया, ''सोच के दरवाजे पर प्रहरी की तरह खड़े हो जाओ, केवल ऐसे निष्कर्षों को अन्दर आने देते हुए जैसा कि तुम शारीरिक परिणामों में महसूस करने की इच्छा रखते हो, तुम अपने आप को समन्वय से नियन्त्रित कर लोगे (साँयस एण्ड हैल्थ पृष्ठ 392) यह कथन अध्यात्म विद्या का कानून प्रस्तुत करता है–कि शरीर एक व्यक्ति की मानसिक अवस्था को अभिव्यक्त करता है।

क्रिश्चियन साँयस दिव्य अध्यात्म विद्या को प्रकट करती है, न कि मानसिक दार्शनिकता को। जबकि इन्सानी विचार सीमित हैं और गलतियों के अधीन है, दिव्य विचार अनन्त हैं, सम्पूर्ण और सदा समन्वित है। अपने स्वंय के विचारों के तत्व की लगातार चौकसी करते हुए ''हम इस मन को अपने अन्दर ला सकते हैं जो कि क्राईस्ट जीसस में भी था'' (फिलिप्पियों 2:5)।

Translation © 2011 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

बाइबल और क्रिश्चियन साँयस के अध्ययन से, एक व्यक्ति सीखता है कि क्या अच्छा, सच्चा और हमेशा रहने वाला है, और कहाँ सच्ची आध्यात्मिक सम्पन्नता, खुशी, सेहत और मित्रता पैदा होती है। यह सम्पन्नता बाइबल की नैतिक शिक्षाओं और आध्यात्मिक सत्यों के अनुसरण से पाई जाती है जैसे कि दस आज्ञाओं और पहाड़ी के संदेश में व्याख्या की गई है। क्राईस्ट की साँयस से एक व्यक्ति अपना जीवन परमेश्वर की आशीषों से भरा हुआ पाता है और यह आशीष हमेशा ही रहते हैं, क्योंकि यह न तो खो सकते हैं और न ही छीने जा सकते हैं; यह अनन्त हैं।

Translation © 2011 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.